Available online at http://www.nrjp.co.in

Journal of Management Science, Operations & Strategies, e ISSN 2456-9305 Vol. 3, Issue, 01. 35-43p, April, 2019

National Research & Journal Publication

Review Article

मैनपुरी जिले में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

[1]डॉ. सुनीता मिश्रा [2]निर्मला वर्मा

कुँ.आर.सी.एम. (पी.जी.) कॉलेज, मैनपुरी

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य जनपद मैनपुरी (उ0प्र0) के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु 300 शिक्षक (महिला एवं पुरुष) नवोदय, राजकीय, सहायता प्राप्त एवं वित्तविहीन विद्यालयों से आकस्मिक विधि से चयनित किये। इन विद्यालयों के शिक्षकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के मापन हेतु ''डॉ. टी.एस. सोधी एवं डॉ. गुरुदेव शर्मा'' द्वारा निर्मित ''सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी'' उपकरण का प्रयोग किया गया। विश्लेषण–उपरान्त नवोदय, राजकीय एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का सामाजिक–आर्थिक स्तर उच्च पाया गया और वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों का सामाजिक–आर्थिक स्तर निम्न पाया गया। सम्भवतः इसका कारण यह हो सकता है कि नवोदय, राजकीय एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक उच्च योग्यता प्राप्त, प्रशिक्षित, स्थायी, उचित वातावरण, समाज में अच्छी सामाजिक प्रस्थिति वाले, उच्च आय, चिकित्सीय सुविधा एवं आवासीय सुविधा प्राप्त थे, जबकि वित्तविहीन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अल्प वेतनमान , अप्रशिक्षित, प्रबन्धतन्त्र का कठोर नियन्त्रण, सेवा सुरक्षा का भय, व्यवसाय के प्रति असन्तोष होने के कारण उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति निम्न पायी गई। ये कई कारण वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर को प्रभावित करते हैं। शिक्षकों के सामाजिक आर्थिक स्तर को अधिक उच्च बनाने हेतु निश्चित मानदेय, प्रशिक्षण, चिकित्सीय एवं आवासीय सुविधा एवं व्यवसाय के प्रति सन्तोष की भावना प्रदान करना, जिससे उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर में वृद्धि हो। शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है षिक्षा के अभाव में व्यक्ति का सामाजिक, आर्थिक, नैतिक एवं चारित्रिक विकास असम्भव है। जन्म के समय बालक का आचरण पशु के समान होता है वह अपनी मूल प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर आचरण करता है तत्पष्चात् षिक्षा के द्वारा ही मूल प्रवृत्तियों में षुद्धिकरण होता है। षिक्षा के अभाव में मानव पशु के समान होता है। इस सन्दर्भ में कहा भी गया है जो व्यक्ति विद्या, साहित्य, संगीत से विहीन होता है वह पशु के समान होता है।

Copyright©2019 डॉ. सुनीता मिश्रा एवं निर्मला वर्मा *This is an open access article for the issue release and distributed under the NRJP Journals License, which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.*

''साहित्य संगीन कलाविहीन

साक्षात पषु पुच्छ विशाण हीनः।

शिक्षा इतनी व्यापक प्रक्रिया है कि मानवेत्तर प्राणियों में भी इसका उपयोग किया जाता है। मानव जीवन के सन्दर्भ में शिक्षा के अभाव में संस्कृति व सभ्यता

के निर्माण की बात नहीं सोची जा सकती। शिक्षा का व्यापक प्रभाव मानव के आध्यात्मिक सामाजिक जीवन पर पड़ता है शिक्षा का उद्देष्य अच्छे नागरिकों का निर्माण करना है। अच्छा नागरिक अपनी योग्यता से स्वयं की प्रगति तो करता ही है, साथ ही वह राश्ट्र की उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान करता है।(1)

जेम्सवार्ड अपनी पुस्तक Dynamic Sociologyesa माना है कि 'शिक्षा से समाज की उन्नति का निकटतम साधन है'।

पेस्टालॉजी के अनुसार'' शिक्षा मनुश्य की अन्तर्निहित शक्तियों का स्वाभाविक, समन्वित एवं प्रगतिषील विकास है''।

शिक्षा सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं शिक्षित समूह की गतिशीलता से जुड़ी है। यहाँ युवा, विद्यार्थी, शिक्षक एवं शिक्षा नियन्त्रकों की सामाजिक पृष्ठभूमि का अध्ययन बहुत ज्ञानवर्धक हो सकता है। सामाजिक–आर्थिक स्तर शिक्षक के वातावरण का एक माप है जिसका प्रभाव अन्य कारकों की अपेक्षा बालक के व्यक्तित्व पर विस्तृत रूप से पड़ता है।

मुख्यतया यह स्तर पिता का व्यवसाय, आय एवं परिवार के क्षिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्तर को व्यकत करता है।

इसीलिए अब्दुल कलाम (2002) ने लिखा है कि ''एक अध्यापक ने एक बार कहा था मुझे पांच वर्ष का एक बच्चा दो। सात–साल बाद कोई भगवान या शैतान भी उस बच्चे को बदल नहीं सकता। यह दावा एक प्रभावशाली शिक्षक ही कर सकता है।''

शिक्षानीति (1986) में लिखा है–''किसी समाज में अध्यापकों के दर्जे से उसकी सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि का पता लगता है, कोई भी राष्ट्र अपने अध्यापक के स्तर से ऊँचे नहीं उठ सकता है ।''

शोधकर्त्री ने माध्यमिक स्तर पर चार प्रकार के विद्यालयों को चुना है। माध्यमिक स्तर पर नवोदय विद्यालय, राजकीय विद्यालय, सहायता प्राप्त विद्यालय एवं वित्तविहीन विद्यालयों में अध्यापकों का तुलनात्मक अध्ययन करना अति आवष्यकहै।(2)

इस सन्दर्भ में इगंरसाल (चौधरी, 2010) ने कहा है कि– '' एक उत्तम विद्यालय का शिक्षक एक हजार पुजारियों के बराबर होता है।''

शिक्षा का उद्देश्य बालक के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाना है एवं व्यक्तित्व का वांछित विकास करना है तो इसके लिए शिक्षा एक उद्देश्यपूर्ण एवं सामाजिक प्रक्रिया है यह विभिन्न पक्षों में भिन्नता रखते हुए सफलता और असफलता सीखने की विधि एवं उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक होती है। अतः सफलता एक सकारात्मक प्रभाव है जबकि असफलता एक नकारात्मक प्रभाव है।(3)

अध्ययन का औचित्य व महत्व

शिक्षक किसी भी राष्ट्र, समाज एवं व्यक्ति के विकास में एक शिल्पी की भूमिका अदा करता है। एक पूर्ण समर्पित व लगनशील शिक्षक ही छात्रों के उज्जवल भविष्य को

सही राह दिखा सकता है। इससे शिक्षक में अपने शिक्षण कार्य के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति से एक अद्भुत आनन्द की प्राप्ति होती है। किसी भी शिक्षक की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को अच्छा बनाने में पिता की आय, शैक्षिक उपलब्धि, वैवाहिक स्थिति, भौतिक संसाधन एवं सम्पत्ति, पारिवारिक पृष्ठभूमि, पद, योग्यता आदि कारकों का प्रभाव पड़ता है। **शाहीन, एफ. (1973)** ने आय एवं बुद्धि को सामाजिक–आर्थिक स्तर को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक बताया और स्पष्ट किया कि अधिक बुद्धिमान व्यक्ति ने अधिक आय पाने वाले व्यवसाय जैसे व्यक्तिगत विभागीय व सरकारी विभागों में नौकरी करना पसन्द किया क्योंकि अधिक आय (वेतन) से उनका सामाजिक–आर्थिक स्तर उच्च होगा।(4)

सामाजिक–आर्थिक स्थिति– प्रत्यात्मक व सैद्धान्तिक प्रारूप स्थिति

स्थिति शब्द के सन्दर्भ में**केली (1991)**ने कहा है, ''किसी व्यक्ति को उसका समूह जिसमें वह निवास करता है क्या मान्यता प्रदान करता है इस प्रदत्त मान्यता को ही उस व्यक्ति के स्तर की संज्ञा दी जाती है। इस मान्यता का निर्धारण उसके द्वारा उन अधिकृत वस्तुओं से होता है जिनके माध्यम से वह प्रतिष्ठा अर्जित करता है तथा उन्हीं वस्तुओं से उसके स्तर में भी परिवर्तन आता है।''

स्थिति एक प्रकार का अधिकार है जो समूह द्वारा व्यक्ति को प्रदान की जाती है और वह व्यक्ति इस अधिकार से जुड़े हुए कार्यों को करता है। अतः कहा जा सकता है कि एक समय विशेष एवं एक व्यवस्था समूह समाज विषेश में व्यक्ति को दूसरों के सम्बन्ध में उसका क्रम या स्थान ही उसकी स्थिति है।

सामाजिक–आर्थिक स्थिति (1992) इससे अभिप्राय है कि किसी व्यक्ति की समाज में क्या स्थिति है, उसके परिवार का आर्थिक स्तर क्या है। आज की सामाजिक–आर्थिक स्थिति ऐसी है जिसमें अध्यापक प्राचीन मूल्यों को विकसित कर सके।सामाजिक–आर्थिक स्थिति वह स्थिति है जिसे एक परिवार का सदस्य सांस्कृतिक अधिकारों में प्रचलित औसत स्तर तथा समुदाय की सामूहिक प्रतिक्रयाओं में भाग लेने के सन्दर्भ में प्राप्त करता है, वहीं उसकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति है।

वर्तमान शोध अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत नवोदय, राजकीय, सहायता प्राप्त एवं वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों को सम्मिलित किया है।(5)

उक्त चारों विद्यालयों के शिक्षकों (नवोदय, राजकीय, सहायता प्राप्त एवं वित्तविहीन) में से कौन सा वर्ग का सामाजिक आर्थिक स्तर उच्च रहा।

इन्हीं प्रश्नों के उत्तरों को प्राप्त करने के उक्त सन्दर्भ में प्रस्तुत शोध तथा सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

1.नवोदय एवं राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2.राजकीय एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3.सहायता प्राप्त एवं वित्तविहीन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4.वोदय एवं वित्तविहीन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5.राजकीय एवं वित्तविहीन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

6.नवोदय एवं सहायता प्राप्त विद्यालयो में कार्यरत शिक्षकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

1.नवोदय एवं राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर में कोई अन्तर नहीं है।

2.राजकीय एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर में कोई अन्तर नहीं है।

3.सहायताप्राप्त एवं वित्तविहीन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर में कोई अन्तर नहीं है।

4.नवोदय एवं वित्तविहीन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर में कोई अन्तर नहीं है।

5.राजकीय एवं वित्तविहीन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर में कोई अन्तर नहीं है।

6.नवोदय एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर में कोई अन्तर नहीं है।

अध्ययन विधि

निर्धारित उद्दश्यों से सम्बन्धित परिकल्पना के परीक्षण हेतु ''घटनोत्तर अध्ययन विधि को'' प्रयुक्त किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के अन्तर्गत उ0प्र0 राज्य में स्थित मैनपुरी जिले के नवोदय, राजकीय, सहायताप्राप्त एवं वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक सम्मिलित है।

सर्वप्रथम मैनपुरी जिले का चयन किया गया। तत्पश्चात आकस्मिक विधि से मैनपुरी (शहर) से 15 तथा ग्रामीण क्षेत्र 45 कुल 60 विद्यालयों का चयन किया गया जिनमें से नवोदय से 20 शिक्षक, राजकीय, विद्यालय से 40, सहायता प्राप्त विद्यालय 190 तथा वित्तविहीन विद्यालयों से 50 शिक्षक (महिला व पुरूष) कुल 300 शिक्षकों का चयन किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ–

प्रदत्तों से निष्कर्ष निकालने हेतु मध्यमान, मध्यांक, मानक विचलन, चतुर्थक–विचलन, एवं टी–मान की गणना की गयी।

तालिका1 *विभिन्न विद्यालयों में चयनित षिक्षकों की संख्या*

स्वतंत्र चर / मा0विद्यालय	नवोदय	राजकीय	सहायता प्राप्त	वित्तविहीन	कुल षिक्षकों की सं0
	20	50	190	50	300

तलिका 2 *कुल समूह के सामाजिक–आर्थिक स्तर प्राप्तांकों के विभिन्न सांख्यिकीय परिमाप*

सांख्यकीय परिमाप	मध्यमान	मध्यांक	प्रामाणिक विचलन	चतुर्थक विचलन	विषमता	ककुदता
कुल समूह	57.06	59.96	7.60	6.31	1.15	.026

S.E.S.S.के प्राप्तांकों के वितरण में निहित विशमता का अध्ययन करने से स्पश्ट होता है कि कुल समूह के सामाजिक –आर्थिक स्तर सम्बन्धी प्राप्तांकों में नकारात्मक (–1.15) दृश्टिगोचारित हो रही है। ककुदता की दृष्टि से प्राप्त S .E.S.S.प्राप्तांकों के वितरण का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि S.E.S.S. प्राप्तांकों में तुंग ककुदता परिलक्षित हो रही है।

उपर्युक्त प्राप्त परिणामों से स्पश्ट है कि एकत्रित किये गये S.E.S.S. के प्राप्तांक अपनी मूल्य समश्टि में सामान्य रूप से वितरित है तथा S.E.S.S. प्राप्तांकों में थोड़ी बहुत विशमता दृष्टिगोचारित हो रही है सम्भवतः प्रतिदर्ष चयन विचलनों के फलस्वरूप ही है।

अतः निष्कर्श रूप में कहा जा सकता है कि अध्ययन के निमित्त चयनित प्रतिदर्ष अपनी मूल समष्टि का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं तथा S.E.S.S. प्राप्तांक समश्टि में सामान्य रूप से वितरित है।

तालिका–3 *नवोदय एवं राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात*

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात/टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
नवोदय विद्यालय	20	64.5	6.0	0.424	0.05स्तर पर असार्थक
राजकीय विद्यालय	40	62.62	6.40		

उपर्युक्त तालिका में दर्शाये गये मध्यमान मूल्यों से स्पष्ट होता है कि नवोदय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की तुलना में अधिक श्रेष्ठ है। उक्त दोनों विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है अथवा नहीं, यह जानने हेतु टी–मान की गणना की गयी।

टी–मान के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि नवोदय एवं राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, क्योंकि प्राप्त टी–मान .05 स्तर पर असार्थक है।

तालिका–4 *राजकीय एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात*

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
राजकीय विद्यालय	40	62.62	6.40	2.33	0.05स्तर पर सार्थक
सहा0प्राप्त विद्यालय	190	60.00	6.60		

उपर्युक्त तालिका में दर्शाये गये मध्यमान मूल्यों से स्पश्ट होता है कि राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति सहायता प्राप्त विद्यालयों में कार्यरत षिक्षकों की तुलना में अधिक श्रेष्ठ हैं।

उक्त दोनों विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है अथवा नहीं, यह जानने हेतु क्रान्तिक अनुपात की गणना की गयी। क्रान्तिक अनुपात के अवलोकन से परिलक्षित होता है कि राजकीय विद्यालय एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सार्थक अन्तर है क्योंकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात . 01 स्तर पर सार्थक है।

तालिका–5 *सहायता प्राप्त एवं वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात*

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात / टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
सहायता प्राप्त विद्यालय	190	60.00	6.60	14.02	0.01स्तर पर सार्थक
वित्तविहीन विद्यालय	50	48.5	4.7		

उपर्युक्त तालिका में दर्शाये गये मध्यमान मूल्यों से स्पष्ट होता है कि सहायता प्राप्त विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति वित्तविहीन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की तुलना में अधिक श्रेष्ठ है।

उक्त दोनों विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है अथवा नहीं, यह जानने हेतु क्रान्तिक अनुपात की गणना की गयी।

क्रान्तिक अनुपात के अवलोकन से स्पश्ट होता है कि सहायता प्राप्त विद्यालयों एवं वित्तविहीन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सार्थक अन्तर है क्योंकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात . 01 स्तर पर सार्थक है।

तालिका–6 *नवोदय एवं वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात*

स्मूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात / टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
न्वोदय विद्यालय	20	64.5	6.0	11.85	0.01स्तर पर सार्थक
वित्तविहीन विद्यालय	50	48.5	4.7		

उपर्युक्त तालिका में दर्शाये गये मध्यमान मूल्यों से स्पष्ट होता है कि नवोदय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति वित्तविहीन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति से श्रेष्ठ है।

उक्त दोनो विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सांख्यिकीय दृश्टिकोण से सार्थक अन्तर है अथवा नहीं, यह जानने हेतु टी–मान की गणना की गयी ।

टी–मान के अवलोकन से स्पश्ट होता है कि नवोदय विद्यालय एवं वित्तविहीन विद्यालयों में कार्यरत षिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सार्थक अन्तर है क्योंकि प्राप्त टी–मान .01 स्तर पर सार्थक है।(6)

तालिका–7 *राजकीय एवं वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्राप्तांको के मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात*

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
नवोदय विद्यालय	20	64.5	6.0	0.424	0.01स्तर पर सार्थक
राजकीय विद्यालय	40	62.62	6.40		

उपर्युक्त तालिका में दर्षाये गये मध्यमान मूल्यों से स्पश्ट होता है कि राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति वित्तविहीन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति से श्रेष्ठ है।

उक्त दोनों विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है अथवा नहीं, यह जानने हेतु क्रान्तिक अनुपात की गणना की गयी। क्रान्तिक अनुपात के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालय एवं वित्तविहीन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सार्थक अन्तर है क्योंकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात01 स्तर पर सार्थक है।

तालिका–8 *नवोदय एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के षिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात*

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात / टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
नवोदय विद्यालय	20	64.5	6.0	2.92	0.05स्तर पर सार्थक
सहायता प्राप्त विद्यालय	190	60.0	6.60		

उपर्युक्त तालिका में दर्षाये गये मध्यमान मूल्यों से स्पश्ट होता है कि नवोदय विद्यालय में कार्यरत षिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति सहायता प्राप्त विशयों में कार्यरत षिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति से श्रेश्ठ है।

उक्त दोनों विद्यालयों के षिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सांख्यिकीय दृश्टिकोण से सार्थक अन्तर है अथवा नहीं, यह जानने हेतु टी–मान की गणना की गयी।टी–मान के अवलोकन से स्पश्ट परिलक्षित होता है कि नवोदय विद्यालय एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों में कार्यरत षिक्षकों की सामाजिक आर्थिक स्थिति में सार्थक अन्तर है क्योंकि प्राप्त टी–मान . 05 स्तर पर सार्थक है।

निष्कर्ष एवं विवेचना :–

1–नवोदय व राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों सामंजस्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2–राजकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों सामंजस्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3–सहायता प्राप्त वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों सामंजस्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4–नवोदय वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों सामंजस्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5–राजकीय वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों सामंजस्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6–नवोदय सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों सामंजस्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

दीक्षित, सुनीता (2009) के शोध परिणाम दर्शाते हैं कि नवोदय, राजकीय एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों का सामाजिक–आर्थिक स्तर उच्च पाया गया जबकि वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों का सामाजिक–आर्थिक स्तर इन विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा निम्न पाया गया।

गौर, अश्विनी कुमार (1988) ने सामाजिक–आर्थिक स्तर का संस्था पर सार्थक प्रभाव पाया और परिणामस्वरुप जाना कि स्ववित्त पोषित संस्थाओं के अध्यापकों को नौकरी की असुरक्षा, निश्चित परिधान, अत्यधिक कार्यभार, मनोरंजन का अभाव आदि समस्याओं को सहन करना पड़ा और वे समाज में सामाजिक–आर्थिक स्तर को अच्छा नहीं बना सके। अतः वर्तमान शोध परिणामों

की पुष्टि गौर, अश्विनी कुमार के परिणामों से होती है।

मिश्रा, दीपा (2013) के शोध परिणाम के फलस्वरुप पाया गया कि नवोदय, राजकीय, सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों का सामाजिक–आर्थिक स्तर उच्च पाया एवं वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों को सामाजिक–आर्थिक स्तर निम्न पाया गया।

उपर्युक्त उपलब्धियों के आधार पर निष्कर्षात्मक रुप में कहा जा सकता है कि नवोदय, राजकीय एवं सहायता प्राप्त शिक्षकों का सामाजिक–आर्थिक स्तर वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा उच्च पाया गया। विद्यालयी सुविधाएँ, बिजली आपूर्ति, नगर से दूर शान्त वातावरण, प्रबन्धक का दबाव न होना, चिकित्सीय सुविधा, फण्ड, जी0पी0एफ0, आवासीय सुविधा अन्य कार्यों का दबाव कम होना आदि कारक इन विद्यालयों के शिक्षकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर को उच्च दर्शाते हैं।वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों को उचित मानदेय न मिलना, उनकी व्यवहार एवं जीवन शैली, प्रबन्धतन्त्र का दबाव, शिक्षक सुविधाओं, बीमा नीति व्यवसाय के प्रति असुरक्षा व असन्तोष की भावना, उचित व्यवसाय की कमी, अनेक जिम्मेदारियाँ आदि कारक इन शिक्षकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर को प्रभावित करते हैं। अतः सरकार इन शिक्षकों को सुविधाएँ एवं निश्चित मानदेय प्रदान करे तभी वित्तविहीन शिक्षकों का सामाजिक–आर्थिक स्तर उच्च होगा। अतः सरकार को इन शिक्षकों के हितार्थ कल्याणकारी योजनाओं को कार्यान्वित करने की आवश्यकताहै।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अब्दुल कलाम, ए0पी0जे0 (2002). तेजस्वी मन। नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ 121.
2. कपिल, एच. के. (1978). सांख्यिकी के मूल तत्व, आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
3. चौधरी, ई0एस0 (2010) शिक्षक प्रशिक्षण में दक्षता सम्बर्द्धनः क्रियात्मक अनुसंधान की भूमिका, नई शिक्षा, 58 (6) पृ0 8.
4. दीक्षित, सुनीता (2009) मैनपुरी जिले में माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, शिक्षण–अभिवृत्ति एवं उनके माध्य सामंजस्य के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन/पी. एच–डी डॉ बी. आर. अम्बेडकर वि. वि. आगरा। पृ0 177.198.

5 मिश्रा, दीपा (2013) मैनपुरी जिले में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों केसामाजिक–आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन; लघु शोध प्रबन्ध; कुँ. आर.सी. महिला महाविद्यालय मैनपुरी, पृष्ठ संख्या 70

6 सोधी एवं शर्मा सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी (SESS) नेशनल साइकोलॉजी कॉरपोरेशन 4/230 कचहरी घाट आगरा 282 004 (भारत उत्तर प्रदेश)